Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

किराना घराना के प्रख्यात कलाकार पं० मणिप्रसाद की गायकी की विशेषताएँ

SRISHTI NIRWAN[1] & DR. ASHOK KUMAR SHARMA[2]

1 Research Scholar (Ph.D), Department of Music & Dance, Kurukshetra University, Kurukshetra
2 Assistant Professor, Department of Music&Dance, Kurukshetra University, Kurukshetra

सार

वर्तमान समय में पंडित मणि प्रसाद जी उस कालखण्ड का नेतृत्व करते हैं जो नई पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी से जोड़ने का कार्य करती है। शास्त्रीय संगीत की पारंपरिक परंपरा का निवर्हन सौ वर्ष पूर्व के कलाकार कैसे करते थे?, इन कलाकारों ने अपनी भावी पीढ़ी को इस परंपरा के निवर्हन के लिये क्या शिक्षा दी?, इन बातों को ग्रहण करने वाले पंडित मणिप्रसाद जी शास्त्रीय संगीत की इन गूढ़ बातों को नई पीढ़ी तक पहुँचाने में एक महत्त्वपूर्ण कड़ी हैं। किराना घराना के एक वरिष्ठ कलाकार के रूप में इन्होंने कई रागों एवं बंदिशों का निर्माण किया। शास्त्रीय संगीत की परंपरा में 'ख्याल' विधा, जो उत्तर भारत में सबसे अधिक प्रचलित एवं लोकप्रिय है, का संवर्द्धन एवं संरक्षण में ये अपना विशेष योगदान दे रहे हैं। पंडित मणिप्रसाद भारतीय शास्त्रीय संगीत के शिखर पुरुष हैं। भारतीय संगीत के प्रसिद्ध 'किराना घराना' को आगे बढ़ाने में आप अहम भूमिका निभा रहे हैं। 'ध्यान रंग पिया' के नाम से इन्होंने कई बंदिशों का अलग-अलग रागों में निर्माण किया है। वर्तमान समय में कर्नाटक सरकार के आग्रह पर पंडित मणिप्रसाद जी 'विदुषी गंगूबाई हंगल संगीत गुरुकुल' हुबली में गुरु के पद को सम्मानित कर रहे हैं। यहाँ पंडित जी कई नये युवा गायक तैयार कर रहे हैं। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर इनके कई अविस्मरणीय रिकार्ड दर्ज हैं। इनके शिष्यों में कई सुप्रसिद्ध कलाकार हैं।

उद्देश्य: किराना घराना के प्रचार-प्रसार में पंडित मणिप्रसाद का योगदान।

शोधविधि: प्रस्तुत शोध-कार्य सर्वेक्षण विधि एवं साक्षात्कार विधि द्वारा किया गया है।

मुख्य शब्द: घराना, किराना घराना, पंडित मणिप्रसाद, गायकी, संगीत यात्रा।

भूमिका

'घराना' को सम्प्रदाय, रीति रिवाज या शैली के नाम से भी जाना जाता है। प्रतिभाशाली शिष्यों एवं विद्यादान करने वाले गुरुजनों को अपने घराने के प्रति अटूट श्रद्धा एवं विश्वास हो उस घराने को मजबूती एवं पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ाने में सक्षम रहे हैं। यही कारण है कि गुरु अपने शिष्यों से ये अपेक्षा रखता है कि वे ज्यादा से ज्यादा अच्छा व योग्य बन पाये और अपने गायकी का प्रचार व प्रसार किया जा सके। विद्यादान करने वाले गुरु अपने प्रतिभाशाली शिष्य के होने पर ही 'घराने' की सृष्टि होती है।1

शास्त्रीय संगीत के प्रत्येक घराने की अपनी अलग-अलग खूबियाँ होती हैं। इसी कड़ी में किराना घराने की भी अपनी कुछ विशेषताएँ हैं जिनके कारण इस घराने को प्रसिद्धि मिली और किराना घराने के प्रवर्तक के रूप में उस्ताद अब्दुल करीम खाँ साहब का संगीत जगत में खूब नाम मशहूर हुआ। किराना घराना एक-एक स्वर को सिलसिलेवार बढ़त के लिए जाना जाता है। उस्ताद अब्दुल करीम खाँ साहब को जिन्होंने सुना होगा, उन्होंने इस मर्म को समझा होगा। उन्होंने रुढ़िवाद से हटकर अपनी मौलिक शैली को जन्म दिया है।2

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

किराना घराने में गायन के प्रारम्भ में लम्बा आलाप लेने की प्रथा नहीं है।3 एक छोटा सा आलाप लेकर बंदिश के बोलों को तालबद्ध गाते समय उसके बराबर आलाप लिए जाते हैं और आलाप के बाद तानें, गमक एवं आलाप अंग में ली जाती हैं। कई तानें विकट और चक्करदार होती थीं। अर्थात् किराना घराने की गायकी में तान क्रिया अत्यंत कृत्रिम होती थी। तानों में सफाई नहीं होती थी परन्तु ये तान कण, आस युक्त, दानेदार व जोरदार होती थीं।4 अर्थात् किराना घराना सदा सुर की मधुरता, चैनदारी से आलाप की बढ़त और बेहतरीन दानेदार तैयार तानबाजी के लिये मशहूर रहा है। किराना घराने की मूल गायकी में आज कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। आज भी इसकी गायकी मूलरूप से प्राचीन किराना घराने की गायकी के समान है।

पंडित मणिप्रसाद

किराना घराना के प्रख्यात कलाकार पंडित मणिप्रसाद भारतीय शास्त्रीय संगीत के शिखर पुरुष हैं। पंडित मणि प्रसाद का जन्म 4 नवम्बर 1930 में संगीतज्ञों के संभ्रांत परिवार में हुआ। इनके पिता पंडित सुखदेव प्रसाद किराना घराने के जाने-माने गायक थे। उन्होंने किराना घराने के प्रर्वत्तक उस्ताद अब्दुल करीम खान और उस्ताद अब्दुल वहीद खान से संगीत सीखा। पंडित सुखदेव प्रसाद जी अपने समय के भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रतिष्ठित सम्मानित गायक थे।

पंडित मणि प्रसाद बचपन से ही अपने पिता के साथ यात्रा करते रहे और जहाँ-जहाँ उनके पिताजी ने अपने संगीत का प्रदर्शन किया उनके साथ-साथ मंच पर शिरकत करके पंडित जी ने अपने पिता से संगीत में निपुणता हासिल की। युवावस्था में पंडित मणि प्रसाद अपने पिता के साथ वर्धा (महाराष्ट्र) से दिल्ली आ गये। यद्यपि इन्होंने संगीत की शिक्षा अपने पिता से ली, लेकिन इनका मार्ग दर्शन पितामह पंडित शक्ति लाल एवं चाचा पंडित शंकर लाल व पंडित गोपाल प्रसाद ने किया।

संगीत यात्रा

पंडित मणि प्रसाद ने अपनी छोटी उम्र से ही शास्त्रीय संगीत की शुरुआत की, क्योंकि इनका जन्म ही संगीतज्ञों के घर में हुआ। 'आल इंडिया रेडियो' ने भी इन्हें 'ए' क्लास की श्रेणी का कलाकार माना है। दूरदर्शन के महान कलाकारों में भी इनकी गिनती की जाती है।

इनके शास्त्रीय संगीत को विश्व फलक पर सराहा गया। पंडित जी ने संसार के अनेक प्रतिष्ठित शहरों में अपने शास्त्रीय गायन से श्रोताओं को मंत्र मुग्ध किया। इन्होंने न केवल नए' राग' बनाए बल्कि 'ध्यानरंग पिया' के नाम से नई बंदिशें मौजूदा राग को दी। पंडित जी राग 'विहँगनी' के लिए खास तौर पर जाने जाते हैं। एक मशहूर भजन उसी राग में लताजी ने गाया था। बोल थे 'सुनियो जो अरज म्हारो' यह भजन लेकिन फिल्म में गाया था।5

इनके शिष्यों में अनेक जाने-माने व्यक्ति है जैसे बड़ौदा के महाराजा रणजीत सिंह, प्रताप सिंह गायकबाड़, रीता गांगुली, सुप्रसिद्ध ठुमरी गायिका सिद्धेश्वरी देवी आदि।

पंडित जी द्वारा कुछ निर्मित राग- ध्यान कल्यान, ध्यान तोड़ी, विहींगनी, शिवकौन्स, अहिरी तोड़ी और भूपेश्वरी है।

कर्नाटक सरकार के आग्रह पर पंडित जो विदुषी गंगूबाई हंगल गुरुकुल हुबली में गुरु के पद को सम्मानित कर रहे हैं। गुरुकुल को किराना घराना का नाम दिया गया जो भारतीय शास्त्रीय संगीत में विशुद्ध शास्त्रीय संगीत के रूप में माना

जाता है यहां पंडित जी नई पीढ़ी के गायक तैयार कर रहे हैं एवं अपने शिष्यों को शास्त्रीय संगीत की बारीकियां सीखा रहे हैं।

आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर इनके कई अविस्मरणीय रिकार्ड दर्ज है। उन सब के अतिरिक्त जो कैसेट एवं सीडी बनाई गई है वे इस प्रकार हैं-

(क) पंडित मणि प्रसाद, ए कंसर्ट सीरिज बाई स्वरश्री इंटरप्राइजेज सीबीएस

(ख) पंडित मणि प्रसाद, मिडास

(ग) पंडित मणि प्रसाद स्वरांजलि

(घ) ध्यान रंग पिया मिडास

(ङ) लव बंदिश ब्लिस टाइम्स म्यूजिक

इन वीडियो रिकार्डिंग को इंटरनेट पर देखी जा सकती है जो काफी लोकप्रिय है।

पंडित जी को अनेक पदक और सम्मान मिले हैं। जिनमें कुछ. हैं...

(क) राजस्थान संगीत अकादमी अवार्ड

(ख) स्वरमणि अवार्ड

(ग) द राजेश्वर अवार्ड सुर सिंगार शमशाद बबई द्वारा प्रदत

(घ) द बाबा अलाउद्दीन खान अवार्ड

(ङ) द श्रीमती गंगूबाई हगल अवार्ड

(च) द उस्ताद फैय्याज खान-उस्ताद नियाज खान मेमोरियल अवाई

(छ) द स्वर साधना रत्न

(ज) द संगीत मार्तंड सम्मान

(झ) द संगीत कला रत्न

(अ) राम रजिनी द्वारा सम्मानित

(आ) संगीत नाटक अकादमी अवार्ड

दूरदर्शन संग्रहालय से प्राप्त रिकार्डिंग में उनके द्वारा गाई राग 'मियां की तोड़ी' के आधार पर उनके गायन पर निम्नलिखित विवेचन प्रस्तुत है6:-

उपरोक्त रिकार्डिंग में पंडित जी ने राग मियाँ की तोड़ी की प्राचीन बंदिश (बड़ा ख्याल) 'शगुन विचारों से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया है। इस बंदिश को किराना घराना के सभी प्रमुख गायकों ने गाया है। यह किराना घराना की प्राचीन बंदिश

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

है। इसमें पंडित जी ने रजा मियां की तोड़ी का एक छोटा सा आलाप, राग की पकड़ के रूप में गाया है। अन्य सार्वजनिक संगीत सभाओं में पंडित जी 'सा' स्वर पर तीन बार ओम् का उच्चारण करते हुए गायन प्रारम्भ करते हैं और उसके पश्चात् बहुत छोटा आलाप लेते हुए बड़े ख्याल का मुखड़ा लेते हैं। इस बंदिश में ''शगुन विचारों'' के 'चा' अक्षर पर सम दिखाया गया है।

पंडित जी का मुखड़ा-बोल गाते हुये 'राम' पर आने का एक खास अंदाज है। यह बंदिश एकताल विलम्बित में गाई गई है। प्रारम्भ में पंडित जी सदैव स्वाई के पूरे बोल प्रथम आवर्तन में लेते हैं जबकि कई गायक मुखड़ा के बोल गाने के बाद बढ़त लेना शुरू कर देते हैं और स्थाई के आलाप बोल आलाप लेने के बाद स्थाई के बोल पूरा करते हैं।

उपरोक्त बंदिश में स्थाई को पूरा करने के पश्चात् बंदिश के एक शब्द 'वमना' को लते हुये बोलालाप द्वारा बढ़त की गयी है।

प्रायः पंडित जी अपने गायन में मन्द (खरज) और अतिमन्द (तरज) सप्तक में आलापचारी करते हैं परंतु दूरदर्शन में गाई मई प्रस्तुति में सीमित समय में होने के कारण बढ़त को थोड़ा कम करते हुए गाया है। थोड़ा मन्द्र में विचरण करते हुए मध्य सप्तक में ज्यादातर विस्तार किया है।

बोलालाप करते हुये तार सप्तक पर थोड़ा न्यास लेने के पश्चात् पंडित जी ने एकताल विलम्बित लय की अंतिम मात्रा अंतरा के प्रारम्भिक बोल ''जब आयेंगे मेरे अंगना'' को गाया है। इसके पश्चात् अंतरे के पूरे बोल नहीं गाते हुये, अंतरे के बोल के 'मोरे अंगना' शब्दों को लेते हुये तार सप्तक में राग की बढ़त की गयी है। किराना घराना के प्रायः सभी गायक अंतरे की बढ़त में तार सप्तक के रूप में 'सां' पर ऐ री' बोल का उच्चारण करते हैं। प्रस्तुत कार्यक्रम में पंडित जी ने 'ऐ' को निध, और 'री' को मे धनिसां स्वर लेते हुए 'सां' पर न्यास किया है। तार सप्तक में विस्तार करने के पश्चात् अंतरे के पूरे बोल गाये गये हैं।

पंडित विलम्बित ख्याल में बोलालाप के पश्चात् सरगम लेते हुये राग स्वरूप प्रदर्शित करते हैं। उपरोक्त गायन में भी अंतरे के बोल पूरे करने के बाद सरगमों द्वारा स्वर विस्तार किया गया है। पंडित जी के गाने में यह दृष्टिगोचर होता है कि ये एक-एक स्वर की चमत्कारिक सरगम लेते हैं। अर्थात् राग में एक-एक सुर की बढ़त होती है।

प्रस्तुत गायन में प्रथम सरगम बढ़त इस प्रकार है -

ग रे ग मे ध मे रे सा ध नि़ सा रे ग रे ग मे प मे रे सा

मे ग रे मे प मे ग रे ग मे ऽ प ऽ ध ध ध प ध प प

रे ग मे प ऽ ध मे रे सा ध़ नि़ ऽ सा ऽ रे ऽ ग ऽ मे ऽ

प ऽ ध मे ऽ रे सा ग रे मे ध नि सां ऽ नि नि ध

मे ग रे ऽ सा नि़ ध मे ग रे सा मे ध नि सां रें गं रें सां

सा सा रे ग मे ध मे रे सा रे ग मे ध नि़ ध़ मे ग रे सा।

यहाँ सरगम में कहीं भी सा सा सा, रे रे, ग ग इत्यादि स्वर नहीं लिये गये हैं। उपरोक्त सरगम को एक सुर की बढ़त कहा।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

पंडित जी विलम्बित ख्याल में कुछ सरगम में धीमी लय में लेते हैं ओर इसके पश्चात् चैगुन और अठगुन लय में बढ़त करते हैं जिसमें तानों के सभी प्रकार (छूठ की तान, पलटे की तान गमक की तान आदि) समाहित होते हैं।

छोटा ख्याल

विलंबित ख्याल के पश्चात् पंडित जी ने छोटा ख्याल गाया है। जिसके बोल हैं 'नी मैं मसरत पूछ लियां तुंसा' है। यह भी एक पंजाबी भाषा में निर्मित एक पुरानी बंदिश है। छोटे ख्याल के स्थाई के बोल लेने के बाद पहली सपाट तान अठगुन लय में लेते हैं और तत्पश्चात् द्रुत लय में ही कुछ और तान लेते हैं, जो आकार में होती है और तीनों सप्तक में होती हैं। इसके पश्चात् स्थाई और अंतरा को पूरा गाते हैं और तान बराबर लेते रहते हैं। अंत में पंडित जी स्थाई के बोल सात पूंछनिया की तिहाई के साथ गायन की इतिश्री करते हैं।

पं॰ मणिप्रसाद के गायन की कुछ अन्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

1. प्रायः स्वयं द्वारा रचित बंदिशें गाने को महत्त्व देते हैं। पंडित जी ने 'ध्यानरंग पिया' उपनाम से विभिन्न रागों में सैंकड़ों बंदिश रची हैं जो सभी लगभग आध्यात्मिक हैं।

2. पंडिज जी ने कुछ राग भी बनाये हैं जिन्हें सार्वजनिक संगीत सभाओं में गाने को महत्त्व देते हैं। इनके द्वारा रचे राग शिव कौस, ध्यानी तोड़ी, ध्यानकल्याण, भूपेश्वरी इत्यादि है।

3. पंडित अपने गायन में लयकारी नहीं करते।

4. पंडित जी को कभी तराना गाते नहीं सुना गया।

5. प्रायः एक-एक सुर की बढ़त लेते हैं जो कठिन और चमत्कारिक होती है।

6. इनकी तानों का स्वरुप छोटा होता है प्रायः लम्बी ताने नहीं गाते।

7. गायन का समापन प्रायः ठुमरी से करते हैं और उस समय हारमोनियम स्वयं ही बजाना पंसद करते हैं।

8. अपने गायन में अपने घराने (किराना घराना) की विशेषताओं का पूर्णरूपेण पालन करते हैं।

9. भजन की फरमाईश होने पर कहते हैं कि पूरा शास्त्रीय संगीत ही भजन है। होरी, दादरा, उप शास्त्रीय संगीत गायन नहीं गाते हैं।

10. विद्वान संगीत समीक्षक और गुणजीन इनकी गायकी को 'उस्तादी गायकी' की संज्ञा देते हैं। आपकी शास्त्रीय गायन के लिये उपयोगी, अच्छी, सुरीली दमदार आवाज है। आप पांच सप्तकों में गायन की क्षमता रखते हैं। पाँच सप्तक अर्थात् (लरज, खरज (मन्द्र) मध्य, तार, अतितार) में आवाज़ लगाने की आपको महारथ हासिल है।

11. प्रायः एकताल, तीन ताल, झपताल, में गायन करते हैं।

निष्कर्ष

किसी भी घराने की गायकी की अपनी रीति होती, उसकी सौन्दर्य प्रणाली, उसके आंतरिक कायदे, स्वयं की आवाज की प्रकृति पर आधारित रहता है। गायन में कुछ बातें ऐसी होती हैं कि जो विशिष्ट आवाज में ही जँचती है। स्वयं की आवाज की प्रकृति को पूरी परख तथा जानकारी होने पर उसमें खिलने वाले प्रकार गायक अपने गायन में अधिक प्रयोग में लाता

है। उसी तरह स्वयं को आवाज जिन्हें बर्दाशत नहीं कर सकती है, ऐसे प्रकार वह टाल जाता है। गायकी किसी भी घराने की एक विशिष्ट पहचान होती है। घराने की लोकप्रियता कलाकार के गायकी पर ही निर्भर करता है। किराना घराने में ऐसे कई कलाकार हुये जिन्होंने अपनी गायकी से इस घराने को अन्यतन ऊँचाईयों तक पहुँचाया। वर्तमान समय में किराना घराना के सबसे वरिष्ठतम् कलाकार के रूप में पं॰ मणिप्रसाद किराना घराना की गायकी को आज की पीढ़ी को सौंपने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। उस्ताद अब्दुल करीम खाँ एवं उस्ताद अब्दुल वहीद खाँ से जो तालीम आपके पिता जी ने ली और आपको इस गायकी से शिक्षित एवं सिंचित किया, वही मूल किराना घराना गायकी का संरक्षण संवर्द्धन करने में आप अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देते हुए दिखते हैं। दो पीढ़ी के कालखण्ड के बीच की खाई को भरते हुए प्रतीत होते हैं।

सन्दर्भ

1. बैनर्जी. जयन्त (1997). घराना: उद्गम विकास एवं उनकी सीमायें. संगीत (पृ॰ 49)
2. माथुर. रामलाल (1997). भारतीय संगीत और संगीतज्ञ. बोहरा प्रकाशन (पृ॰ 107)
3. मिश्र. शम्भुनाथ (2002). हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना-परम्परा. प्रकाशन विभाग (पृ॰ 77)
4. खुराना. शन्नो (1995). ख्याल गायकी के विविध घराने (पृ॰ 55)
5. संगीत पत्रिका (2013). बागेश्री कला सम्मान (पृ॰ 2)